उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव

अध्ययन मार्गदर्शिका

अध्याय चार:

अर्थ के लिए पद्धतियाँ

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES
Biblical Education. For the World. For Free.

विषय-वस्तु सूची

इस अध्याय और मार्गदर्शिका का उपयोग कैसे करें..... 3

नोट्स 4

I. **परिचय** (0:20) 4

II. **विषयनिष्ठक** (3:25) 4
- क. पृष्ठभूमि (5:52) 5
- ख. प्रभाव (10:15) 5

III. **आत्मनिष्ठक** (17:02) 6
- क. पृष्ठभूमि (18:19) 6
- ख. प्रभाव (22:18) 7

IV. **संवादात्मक** (27:23) 8
- क. पृष्ठभूमि (30:16) 8
- ख. प्रभाव (33:30) 9
- ग. तुलना (38:55) 9
  1. अधिकार-संवाद और विषयनिष्ठक (40:06) 9
  2. अधिकार-संवाद और आत्मनिष्ठक (42:03) 9

V. **सारांश** (49:04) 10

पुनर्विचार हेतु प्रश्न..... 11

लागू करने हेतु प्रश्न..... 15

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

इस अध्याय और मार्गदर्शिका का उपयोग कैसे करें

इस अध्ययन मार्गदर्शिका को सम्बद्ध वीडियो अर्थात् चलित दृश्य अध्यायों के साथ संयुक्त रूप में उपयोग करने के लिए निर्मित किया गया है। यदि आपके पास वीडियो उपलब्ध नहीं हैं, तो यह अध्ययन मार्गदर्शिका ऑडियो अर्थात् श्रव्य अध्याय और/या अध्याय की मूल प्रतियों के संस्करणों के साथ कार्य करने के लिए भी सहायता देंगे। इसके अतिरिक्त, अध्याय और मार्गदर्शिका की मंशा एक सीखने वाले समुदाय के उपयोग के लिए की गई है, परन्तु साथ ही इनका उपयोग यदि आवश्यक है तो व्यक्तिगत् अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप अध्याय को देखें**
    - **स्वयं को तैयार करें** – किसी भी अनुशंसित अध्यायों को पढ़ कर पूरा कर लें।
    - **देखने के लिए समय निर्धारित करें** – इस मार्गदर्शिका के नोट्स खण्ड में, अध्याय को उन भागों में विभाजित किया गया है जो कि वीडियो के साथ सम्बद्ध हैं। प्रत्येक मुख्य भाग के साथ दिए हुए लघुकोष्ठकों में दिए हुए समय कोड्स का उपयोग, यह निर्धारित करता है कहाँ से अध्याय देखना आरम्भ किया जाए और कहाँ देखना समाप्त होता है। थर्ड मिलेनियम के अध्याय सघनता से सूचनाओं के साथ भरे हुए हैं, इसलिए हो सकता है कि आप इसे कई टुकड़ों में देखना चाहेंगे। इन टुकड़ों को मुख्य भागों के अनुसार होना चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हैं तब**
    - नोट्स बनाएं — अध्ययन मार्गदर्शिका के नोट्स खण्ड अध्याय की मूल रूपरेखा की जानकारी रखते हैं, जिसमें प्रत्येक खण्ड को आरम्भ किए जाने के लिए समय कोड्स और कुँजी नोट्स सम्मिलित हैं जो कि आपका मार्गदर्शन इन सूचनाओं के लिए करेंगे। अधिकांश मुख्य विचारों को पहले से ही सारांशित कर दिया गया है, परन्तु इन्हें स्वयं के नोट्स के द्वारा पूरक किया जाना सुनिश्चित करें। आपको समर्थन देने वाली अतिरिक्त सामग्री को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को स्मरण करने, विवरण देने से और इनका बचाव करने में सहायता प्रदान करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिख लें** – जब आप वीडियो को देखते हैं, तब हो सकता है कि जो कुछ आप सीख रहे हैं उसके प्रति आपके पास टिप्पणियाँ और/या प्रश्न हों। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को हाशिये में लिखें ताकि इन्हें आप अध्याय को देखने के पश्चात् समूह के साथ साझा कर सकते हैं।
    - **अध्याय के भागों को देखते समय लघु ठहराव/पुन: आरम्भ बटन का उपयोग करें –** आप पाएंगे कि कुछ निश्चित स्थानों पर पुनर्विचार के लिए कठिन अवधारणाएँ, या रूचिपूर्ण बातों पर विचार विमर्श या अतिरिक्त नोट्स लिखने के लिए वीडियो का लघु ठहराव या इसे पुन: आरम्भ करना सहायतापूर्ण है।
- **आपके द्वारा अध्याय को देख लेने के पश्चात्**
    - **पुनर्विचार के लिए प्रश्नों को पूरा करें** – पुनर्विचार के लिए प्रश्न अध्याय की मूल विषय-वस्तु के ऊपर आधारित है। आपको उपलब्ध किए हुए स्थान में पुनर्विचार के प्रश्नों के उत्तर को देना चाहिए। इन प्रश्नों को एक समूह की अपेक्षा व्यक्तिगत् रूप से पूरा किया जाना चाहिए।
    - **उपयोग के लिए प्रश्नों का उत्तर दें/विचार विमर्श करें** – उपयोग हेतु प्रश्न ऐसे प्रश्न हैं जो कि इस अध्याय की विषय-वस्तु के साथ सम्बद्ध होते हुए मसीही जीवन यापन, धर्मविज्ञान और सेवकाई से सम्बधित हैं। उपयोग हेतु प्रश्न लिखित गृहकार्यों या समूह के विचार विमर्श के लिए विषयों के लिए उपयुक्त हैं। क्योंकि लिखित गृहकार्यों के लिए, यह अनुशंसा की जाती है कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बा नहीं होना चाहिए।

© 2013 थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ के द्वारा
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:20)

- ज्ञान की वस्तुयें : चीजें हैं जिन्हें हम समझने की कोशिश करते हैं।

- ज्ञान के विषय : लोग जो अध्ययन करते हैं।

जब हम बाइबल की व्याख्या करते हैं, तो हम आत्मनिष्ठ होते हैं, और हमारे अध्ययन की विषय बाइबल है।

विषयनिष्ठ और आत्मनिष्ठ के सम्बन्ध में तीन मुख्य पद्धतियाँ :

- विषयनिष्ठवाद : यह निष्पक्ष ज्ञान तक पहुँचा जाना सम्भव है।

- आत्मनिष्ठवाद : ज्ञान सदैव व्यक्तिगत् पूर्वाग्रहों से प्रभावित होता है।

- संवादवाद : विषयनिष्ठवाद और आत्मनिष्ठक दृष्टिकोणों के बीच निरन्तर परस्पर क्रिया करते रहने पर जोर देती है।

II. विषयनिष्ठक (3:25)

विषयनिष्ठतावादी विद्वान यह विश्वास करते हैं कि वे बाइबल की व्याख्या निष्पक्षता से कर सकते हैं।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

क. पृष्ठभूमि (5:52)

वैज्ञानिक बुद्धिवाद:

- रेने देकार्त (1596 – 1650), आधुनिक बुद्धिवाद के जनक ने तर्क को सच्चाई के सर्वोच्च न्यायाधीश के रूप में पदोन्नत किया।

- फ्रांसिस बेकन (1561 – 1626), आधुनिक विज्ञान के जनक ने भौतिक संसार का अध्ययन करने के लिए तर्कसंगत, तार्किक सोच को लागू किया।

संरचनावाद :

संरचनावादियों ने तर्कसंगत और वैज्ञानिक विषयनिष्ठता का उपयोग जो कुछ वे अध्ययन करते हैं, उसकी संपूर्ण समझ को प्राप्त करने के लिए उपयोग करने के प्रयास में किया ।

ख. प्रभाव (10:15)

- बाइबल का आलोचनात्मक अध्ययन : पवित्रशास्त्र की जाँच-पड़ताल केवल तर्कसंगत जाँच-पड़ताल करते हैं, और इसलिए, वे पवित्रशास्त्र के दावों और शिक्षाओं को स्वीकार करने से इन्कार कर देते हैं।

- इवैन्जेलिकल बाइबल अध्ययन : इस बात पर जोर देता है कि पवित्रशास्त्र पूरी तरह से सत्य और आधिकारिक है और सारे के सारे वैज्ञानिक निष्कर्षों को अंततोगत्वा इसकी शिक्षाओं के अधीन होना चाहिए।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

III. आत्मनिष्ठक (17:02)

आत्मनिष्ठतावादी यह पहचान करते हैं कि मानवीय प्राणी, संसार, और विशेषकर विश्वास के विषय, अक्सर वैज्ञानिक बुद्धिवाद के द्वारा समझने के लिए बहुत अधिक जटिल हैं।

क. पृष्ठभूमि (18:19)

आधुनिक आत्मनिष्ठतावाद ने ज्ञानोदय के विषयनिष्ठतावाद की प्रतिक्रिया में आंशिक रूप से प्रसिद्धि प्राप्त की थी।

- डेविड ह्यूम (1711 से लेकर 1776), स्कॉटिश संदेहवादी, ने विश्वास किया हमारी भावनाएँ, इच्छाएँ और मानसिक श्रेणियाँ सदैव हमारी सोच को प्रभावित करती हैं

- इम्मानुएल कान्त (1724 -1804) ,जर्मन दार्शनिक, विश्वास किया कि हम संसार का अनुभव अपने अनुभवों को तर्कसंगत श्रेणियों या धारणाओं की प्रक्रिया से करते हैं जो कि पहले से ही हमारे मन में विद्यमान हैं।

छायावाद : ने यह बहस की कि कविता, नाटक, संगीत और दृश्य कला वास्तविकता की एक समझ को प्रदान करता है जो कि तर्कसंगत, वैज्ञानिक प्रवचन से अत्यधिक उत्तम हो सकता है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

उत्तरकालीन-संरचनावाद: ने यह जोर दिया कि ज्ञान के विषयनिष्ठक दावों को आत्मनिष्ठक पूर्वाग्रहों, भावनाओं और विद्यमान मान्यताओं के कारण भरोसा नहीं किया जा सकता है

आत्मनिष्ठावादी व्याख्याकार बहस करते हैं कि कला और साहित्य, जिसमें बाइबल भी सम्मिलित है, का अर्थ हमारे भीतर ही स्थित होना चाहिए।

ख. प्रभाव (22:18)

- बाइबल का आलोचनात्मक अध्ययन : यह बहस करता है कि पवित्रशास्त्र के मूलपाठ में किसी तरह की कोई विषयनिष्ठक अर्थ नहीं पाया जाता है और बाइबल के पाठकों को उत्साहित करते हैं कि वे पवित्रशास्त्र को अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपयोग करके इसमें स्वयं निर्मित अर्थों को उत्पन्न करें।

- इवैन्जेलिकल बाइबल अध्ययन : यह स्वीकार करते हैं कि बाइबल परमेश्वर का वचन है और इसका अर्थ व्याख्याकारों की बजाए परमेश्वर की ओर निर्धारित किया जाना चाहिए।

प्रचारक और बाइबल के शिक्षक निरन्तर बाइबल के संदर्भों को उनकी समकालीन लाभों में, मूलपाठ की ऐतिहासिक संरचना की चिंता न करते हुए पढ़ते चले जाते हैं।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

IV. संवादात्मक (27:23)

शब्द "संवादात्मक" एक ऐसे विचार की ओर संकेत करता है जिसमें व्याख्या में एक तरह का संवाद या विचार विमर्श मूलपाठ और पाठकों के मध्य में सम्मिलित होता है।

क. पृष्ठभूमि (30:16)

- फ्रेडरिक शलाएरमाकर (1768 -1834) ने व्याख्या के सुप्रसिद्ध नमूने जिसे "व्याख्याशास्त्रीय चक्र" पुकारा गया को प्रस्तावित किया।

- थॉमस कुहन (1922 – 1996), ने यह बहस कि वैज्ञानिक ज्ञान विषयनिष्ठक वास्तविकता और प्रतिमानों की समझ के बीच हुई पारस्परिक क्रिया के परिणामस्वरूप होते हैं।

- हंस-जॉर्ज गॉडामेर (1900 – 2002) ने अर्थ को दो क्षितिजों के विलय के संदर्भ में बात की।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

ख. प्रभाव (33:30)

इवैन्जेलिकलवादियों ने यह जोर दिया है कि बाइबल का पठन् एक सामान्य पुस्तक के साथ किए हुए संवाद से भिन्न होता है क्योंकि, अन्य पुस्तकों के विपरीत, बाइबल के पास हमारे ऊपर सम्पूर्ण अधिकार है ("अधिकार-संवाद")।

ग. तुलना (38:55)

1. अधिकार-संवाद और विषयनिष्ठक (40:06)

अधिकार-संवाद का प्रतिरूप यह स्वीकार करता है कि विषयनिष्ठक सच्चाई को पवित्रशास्त्र के मूलपाठ में से प्राप्त किया जा सकता है।

अधिकार-संवाद प्रतिरूप हमें इस सोच के खतरे से बचने में सहायता करता है कि हममें से कोई भी जब हम पवित्रशास्त्र तक पहुँचते हैं तो पूरी तरह से विषयनिष्ठक हो सकता है।

2. अधिकार-संवाद और आत्मनिष्ठक (42:03)

अधिकार-संवाद प्रतिरूप यह स्वीकार करता है कि हमारे दृष्टिकोण और मान्यताएँ बाइबल के संदर्भ को व्याख्या करने के हमारे तरीके को प्रभावित करती हैं।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

कि हम हमारी आत्मनिष्ठता को पवित्रशास्त्र के अधिकार के अधीन न करें, तो बाइबल की हमारी व्याख्याओं में गंभीर बाधायें आ जाएंगी।

बाइबल की जाँच-पड़ताल करना एक आजीवन चलती रहने वाली प्रक्रिया है जिसमें पवित्रशास्त्र हमें परिवर्तित करता है और हम को मसीही विश्वास में परिपक्व और विकसित करता है।

V. सारांश (49:04)

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

पुनर्विचार हेतु प्रश्न

1. ज्ञान के विषय और व्यक्तिपरक की ओर तीन मुख्य पद्धतियों की सूची बनाएं और व्याख्या करें?

2. व्याख्या करने की विषयनिष्ठक पद्धतियों की दार्शिनक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों का वर्णन करें?

© 2013 थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ के द्वारा
www.thirdmill.org

3. बाइबल की व्याख्या के ऊपर विषयनिष्ठक पद्धतियों के क्या प्रभाव पडे हैं?

4. व्याख्या करने की आत्मनिष्ठक पद्धतियों की दार्शिनक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों का वर्णन करें?

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

5. बाइबल की व्याख्या के ऊपर आत्मनिष्ठक पद्धतियों के क्या प्रभाव पडे हैं?

6. व्याख्या करने की संवादात्मक पद्धतियों की दार्शिनक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों का वर्णन करें?

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

7. अधिकार-संवाद और विषयनिष्ठक प्रतिमानों और अधिकार-संवाद और आत्मनिष्ठक प्रतिमानों की तुलना और इसमें भेद प्रगट करें।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

लागू करने हेतु प्रश्न

1. बाइबल का अध्ययन करने के लिए किस पद्धति को आप ने विकसित किया है, या किसे इस समय आप उपयोग कर रहे हैं? किस तरह से यह पद्धतियाँ आपकी सहायता करती हैं ? आप इसे कैसे और अधिक उन्नति कर सकते हैं?

2. क्या बाइबल की दृढ़ता से विषयनिष्ठक समझ तक पहुँचा जा सकता है ? आपने उत्तर का वर्णन करें ?

3. कैसे आप स्वयं को बाइबल के संकीर्ण भावनात्मक या सहजबोध तरीके के पठन् से बचा सकते हैं?

4. वे कौन से तरीके हैं जिनमें आप ने बाइबल की व्याख्या के संदर्भ में विषयनिष्ठवाद का सामना किया है ?

5. पवित्रशास्त्र की व्याख्या और इसके प्रति आपकी समझ को कैसे विषयनिष्ठवाद ने प्रभावित किया है?

6. पवित्रशास्त्र के प्रति आपकी समझ को आपके व्यक्तिगत् अनुभव और अवधारणाओं की ओर प्रभावित किए जाने वाले कौन से खतरे हैं?

7. प्रार्थनापूर्वक बाइबल के साथ वार्तालाप के कारण आपने कौन से लाभों को प्राप्त किया है?

8. बाइबल के प्रति आपकी समझ को उन्नत करने के लिए किस तरह से पवित्रशास्त्र के साथ आपके संवाद को समायोजित करना चाहिए?

9. जब आप बाइबल का अध्ययन करते हैं तब किस तरह से आप प्रश्नों और विचारों का निपटारा करते हैं?

10. किस तरह से पवित्रशास्त्र की व्याख्या के लिए आपकी व्यक्तिगत्, आत्मनिष्ठक समझ मूल्यवान आपके लिए साबित हुई है?

11. वे कौन से तरीके हैं जिनमें आप अन्यों को पवित्रशास्त्र के साथ अधिकार-संवाद प्रतिमान के संदर्भ में वार्तालाप करने के लिए सम्मिलित करेंगे ?

12. इस अध्याय से कौन सी सबसे महत्वपूर्ण बात को आपने सीखा है?

© 2013 थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ के द्वारा
www.thirdmill.org